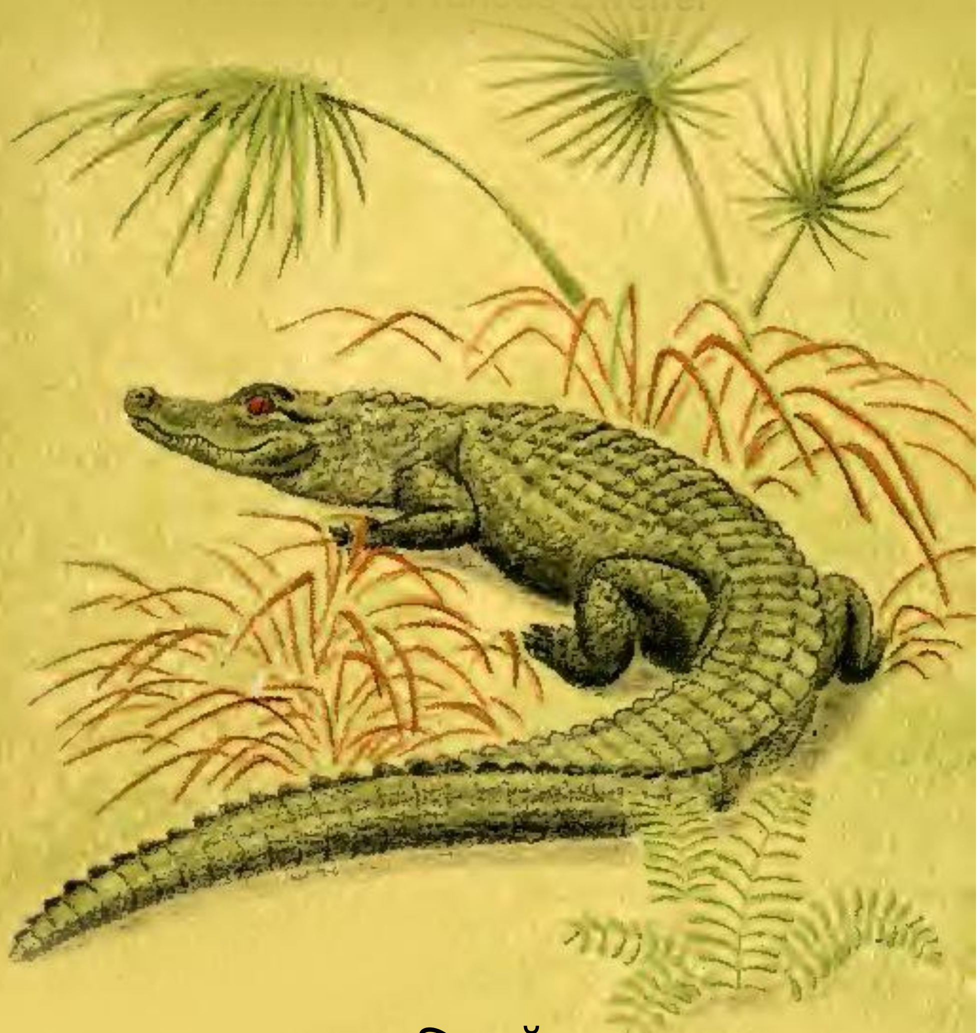
मगरमच्छ



एवलिन शॉ

चित्र: फ्रांसिस ज़्वेइफ़ेल





मगरमच्छ



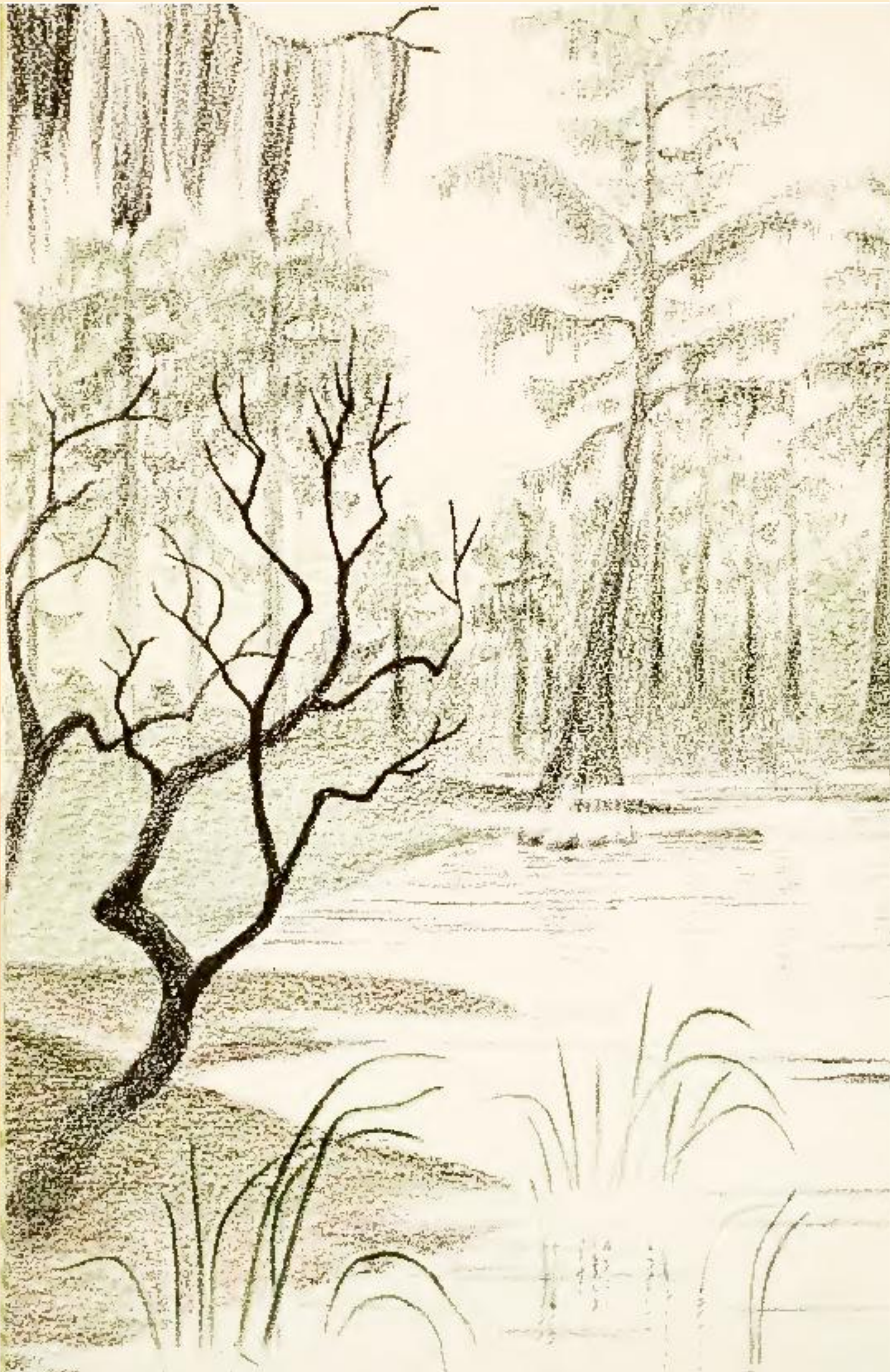
मगरमच्छ

एवलिन शॉ

चित्र: फ्रांसिस ज़्वेइफ़ेल









सुबह की धुंध दलदल को छिपा देती है,

वो पेड़ों और पौधों को भी छिपा देती है.

और आराम कर रहे जानवरों को भी.



सुबह की रोशनी तेज होती जाती है.

जानवर हिलना शुरू कर देते हैं.

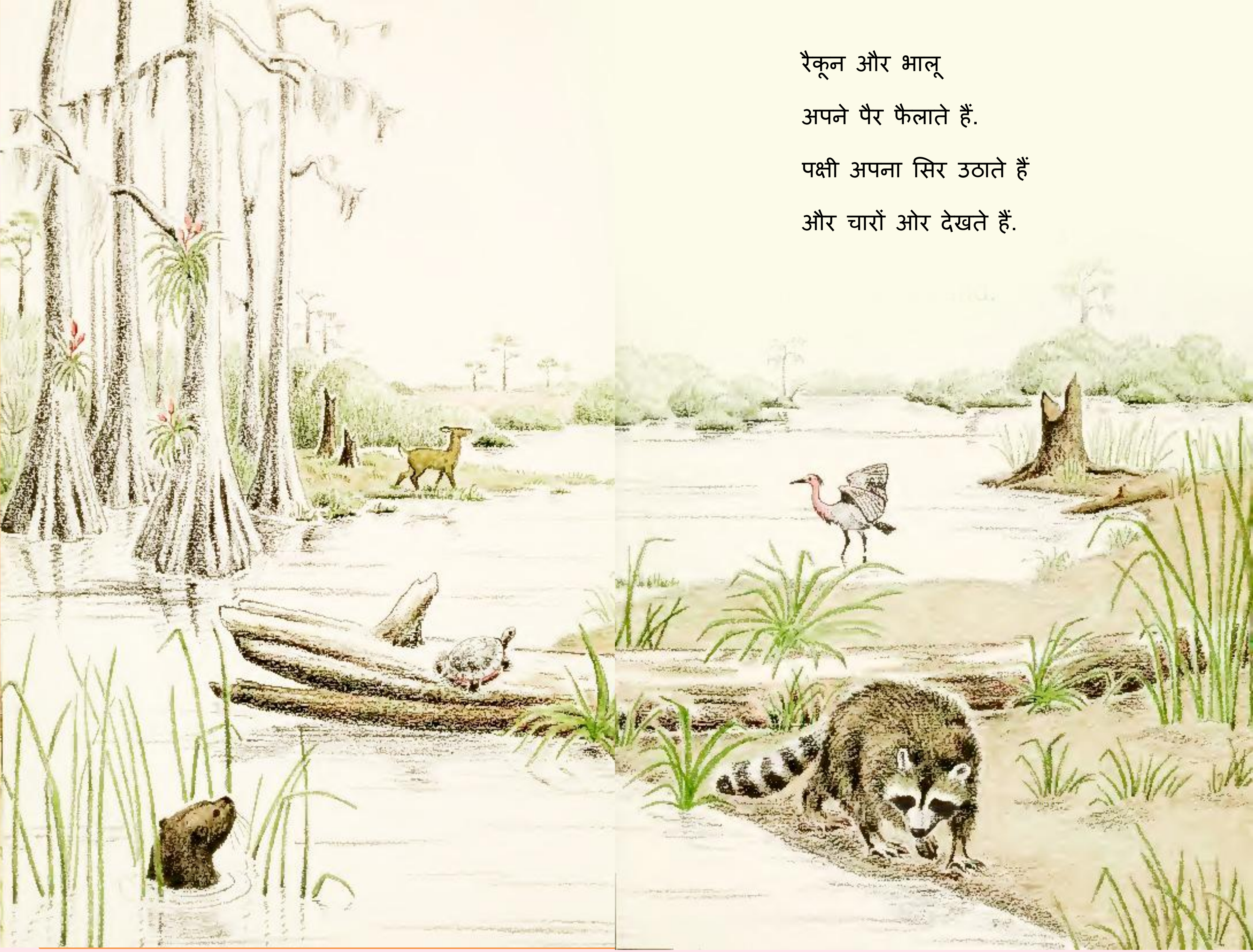


रैकून और भालू

अपने पैर फैलाते हैं.

पक्षी अपना सिर उठाते हैं

और चारों ओर देखते हैं.





एक मादा मगरमच्छ

नाले के पास घास

की एक चटाई पर बैठी है.

मादा मगरमच्छ दस फीट लंबी है.

वो इतना बड़ी है कि वो

अन्य सभी जानवरों से सुरक्षित है.

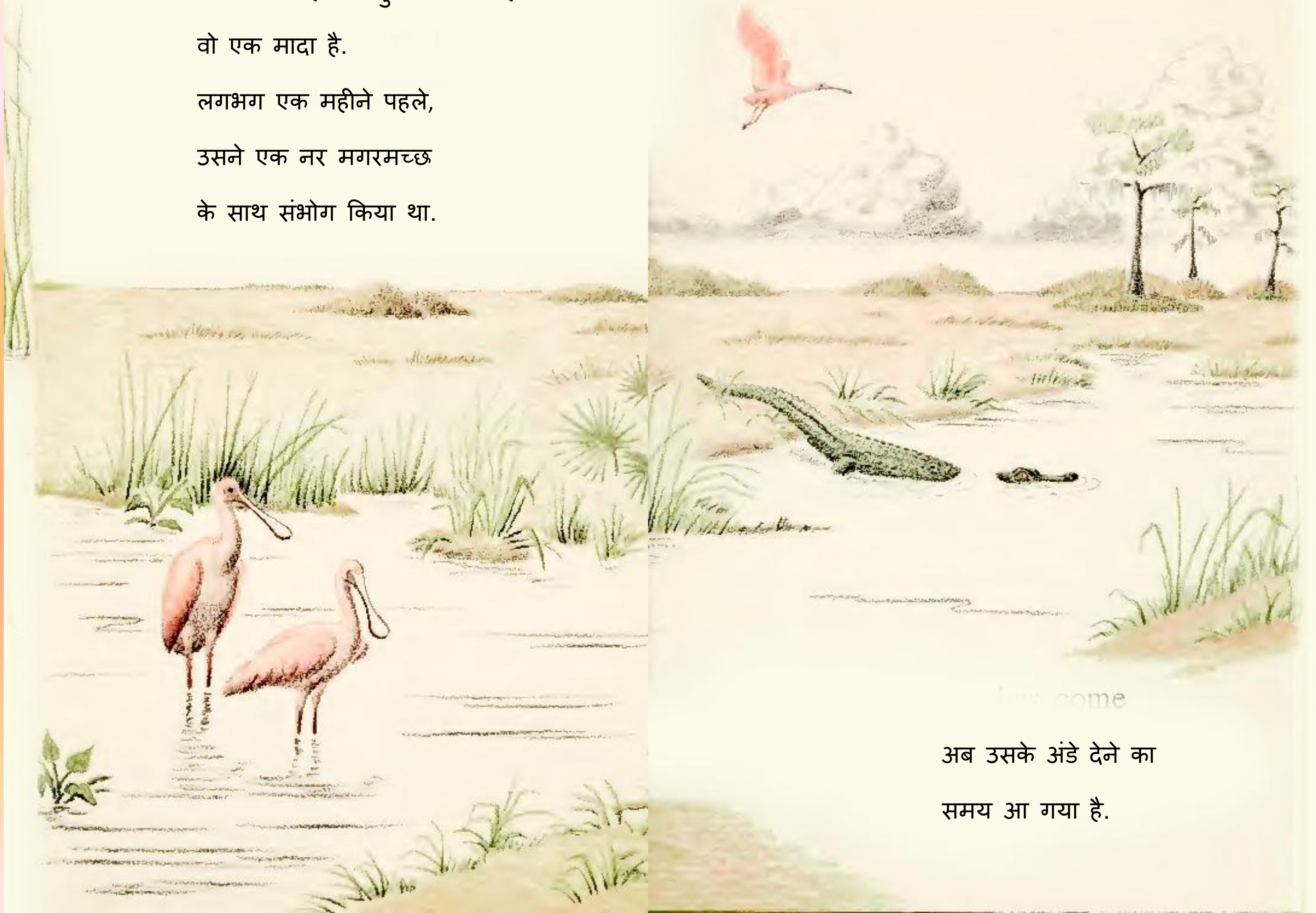
मगरमच्छ हिलना शुरू कर देती है.

वो एक मादा है.

लगभग एक महीने पहले,

उसने एक नर मगरमच्छ

के साथ संभोग किया था.



अब उसके अंडे देने का

समय आ गया है.

उसे अंडों के लिए

एक बड़ा घोंसला बनाना पड़ेगा.

वह अपने घोंसले पर

कई दिनों तक काम करती है.

घास को समतल बनाने के लिए

वह उस पर अपने पैर पटकती है.

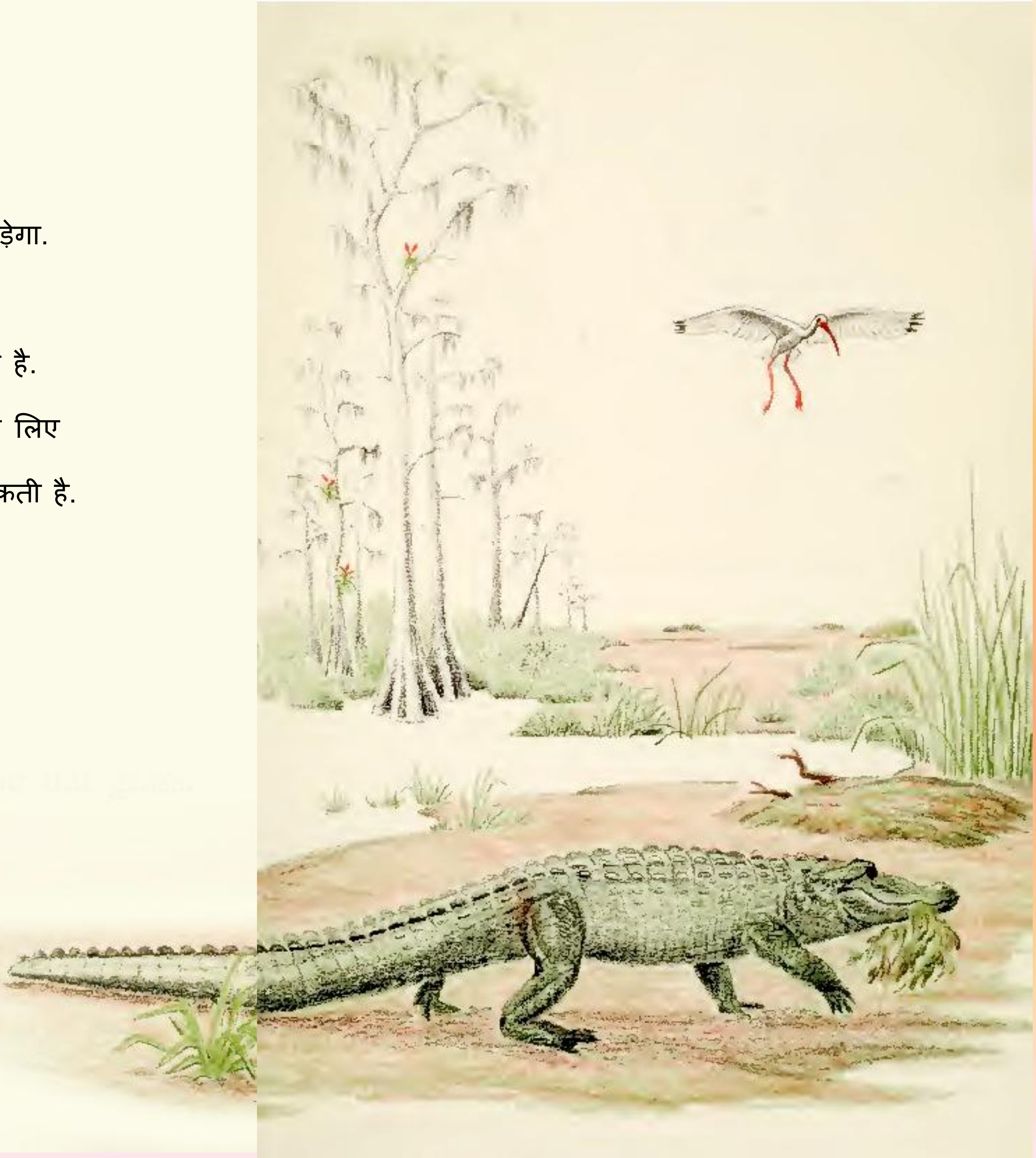
वह अपने बड़े मुंह से

छोटे पेड़ों से टहनियाँ

और पत्तियाँ तोड़ती है.

वह उन्हें समतल

घास पर खींचती है.



वह नरकट तोड़ती है

और उन्हें अपने घोंसले में खींचती है.

वह पानी में गोता लगाती है

और जलीय पौधों को उखाड़ती है.

पौधों की जड़ों पर

मिट्टी लगी होती है.

मगरमच्छ उन्हें अपने

घोंसले पर रखती है.



घोंसला ऊँचा और ऊँचा होता जाता है.

यह पौधों, टहनियों और मिट्टी का

एक मोटा गीला टीला बन जाता है.

वो लगभग दो फीट ऊँचा होता है.

माँ मगरमच्छ घोंसले में चालीस अंडे देती है.

वह अंडों को पौधों और मिट्टी

से ढक देती है.

मिट्टी और पौधे, अंडों को छिपा देते हैं.





अंडे दिखाई नहीं देते.

लेकिन कुछ जानवर उन्हें

घोंसले से खोदकर निकाल लेते हैं.

रैकून और भालू,

मगरमच्छ के अंडे खाते हैं.

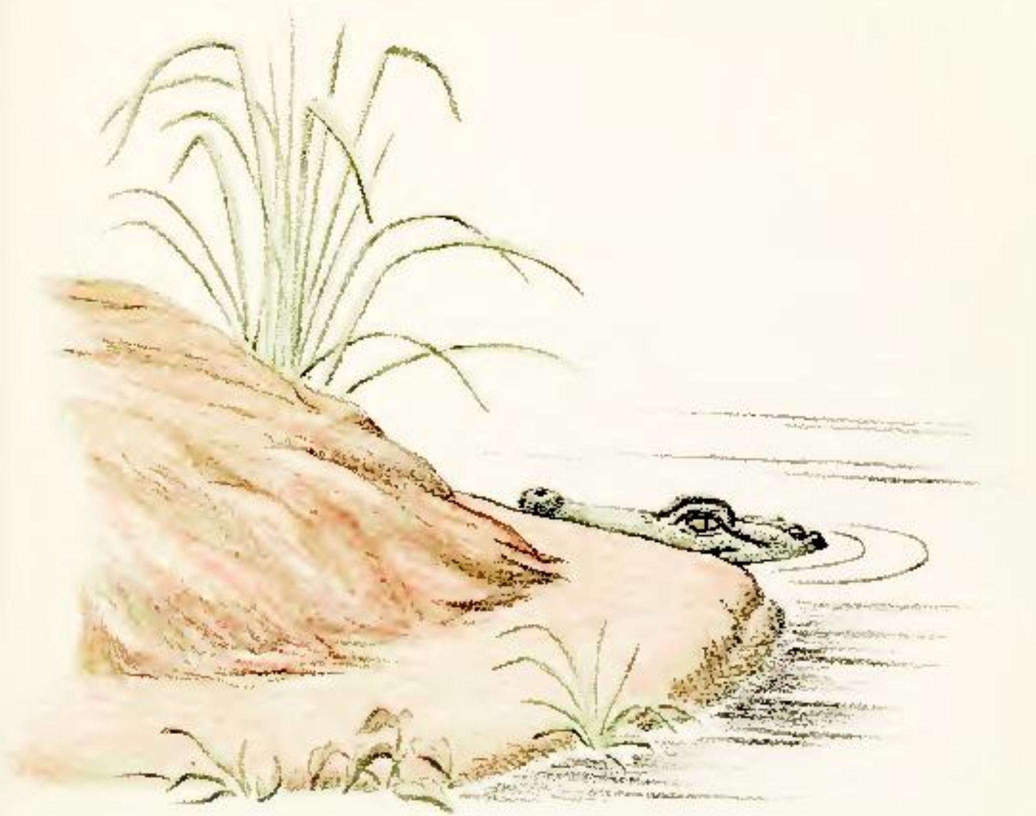
एक भालू, वो सभी

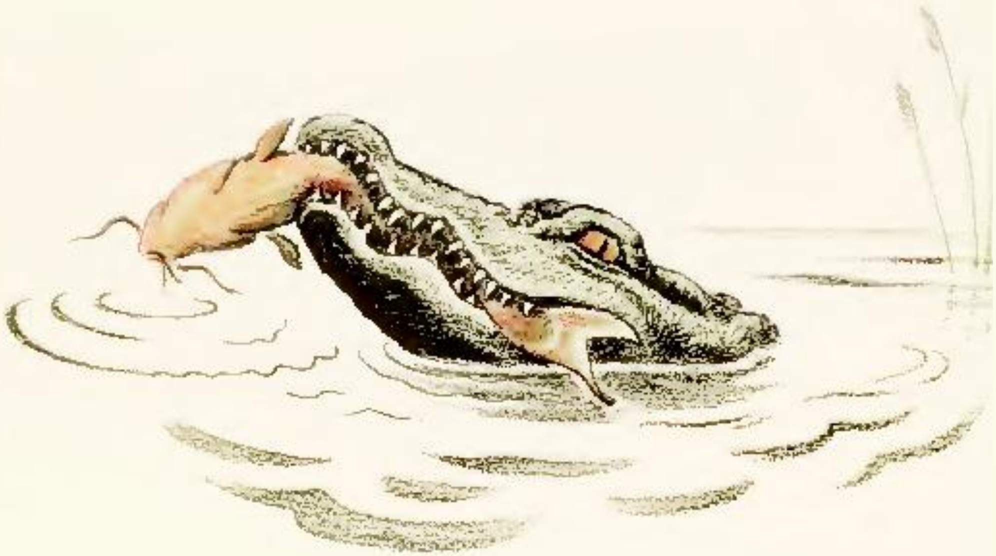
चालीस अंडे खा सकता है.

इसलिए माँ मगरमच्छ

ज़्यादातर समय अपने

घोंसले के पास ही रहती है.





लेकिन कभी-कभी उसे

घोंसला छोड़ना पड़ता है.

उसे खाने के लिए मछलियाँ

या कछुए ढूँढ़ने पड़ते हैं.

एक सुबह मगरमच्छ

अपने घोंसले से दूर है.

वह भोजन की तलाश में है.

एक रैकून घोंसले के पास

पौधों के बीच से आता है.

वह भी भोजन की तलाश में है.



रैकून, मगरमच्छ के घोंसले को देखता है.

वह अंडे पाने के लिए

टीले में खुदाई करना शुरू कर देता है.

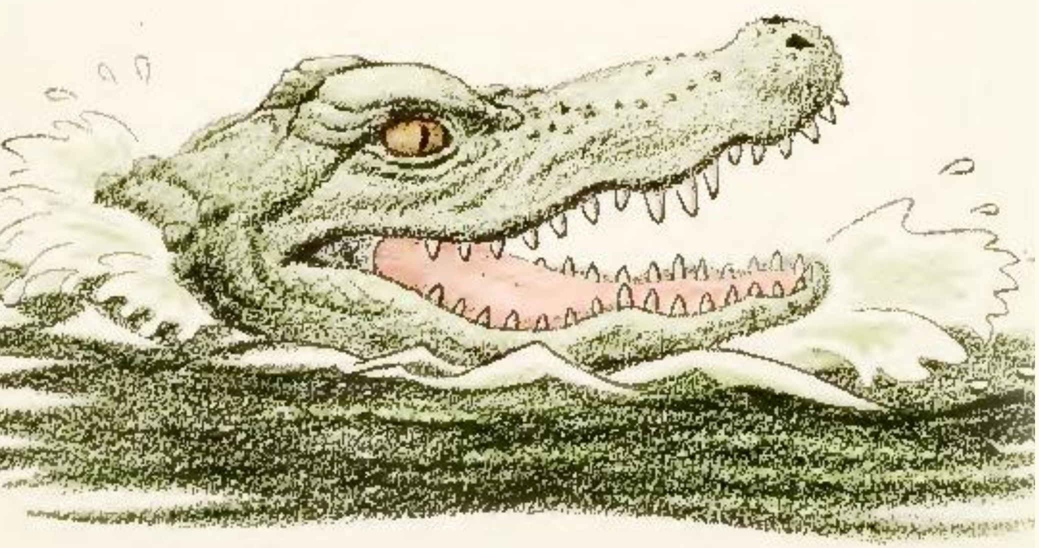


अचानक, माँ मगरमच्छ अपना बड़ा सिर

पानी से बाहर निकालती है.

वह सूँघती है और जोर से

फुफकारने की आवाज़ निकालती है.

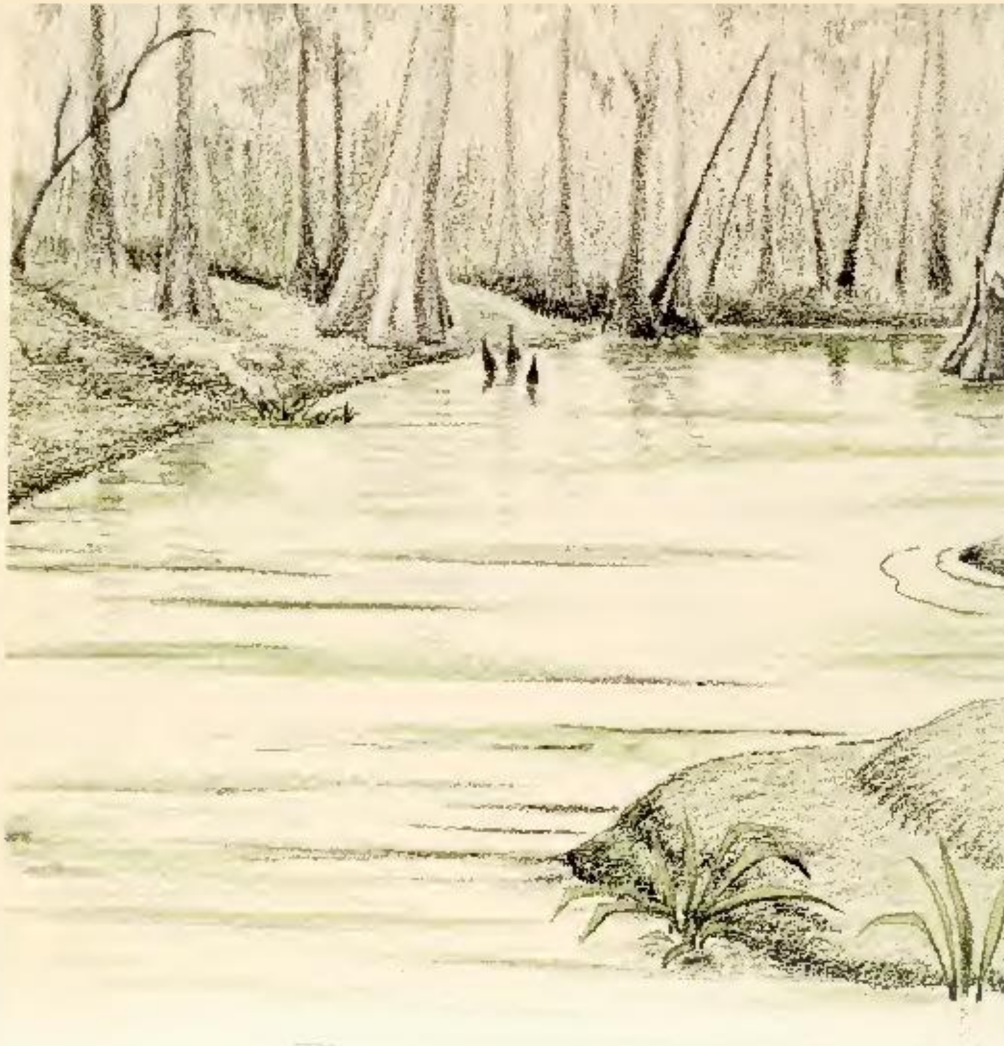




वह घोंसले की ओर दौड़ती है.

रैकून जितनी तेजी से भाग सकता है,

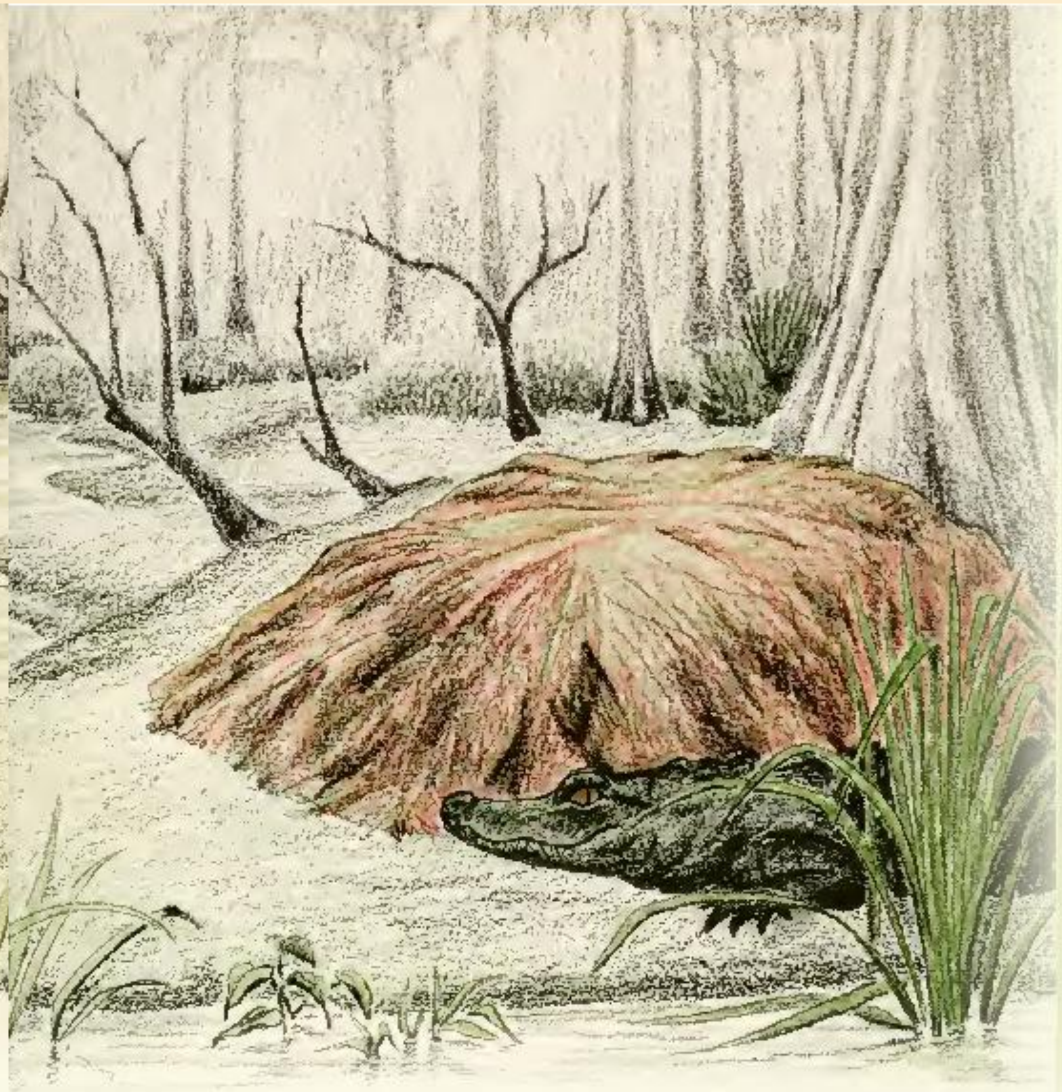
वहाँ से भाग जाता है.



गर्मियाँ बीत जाती हैं.

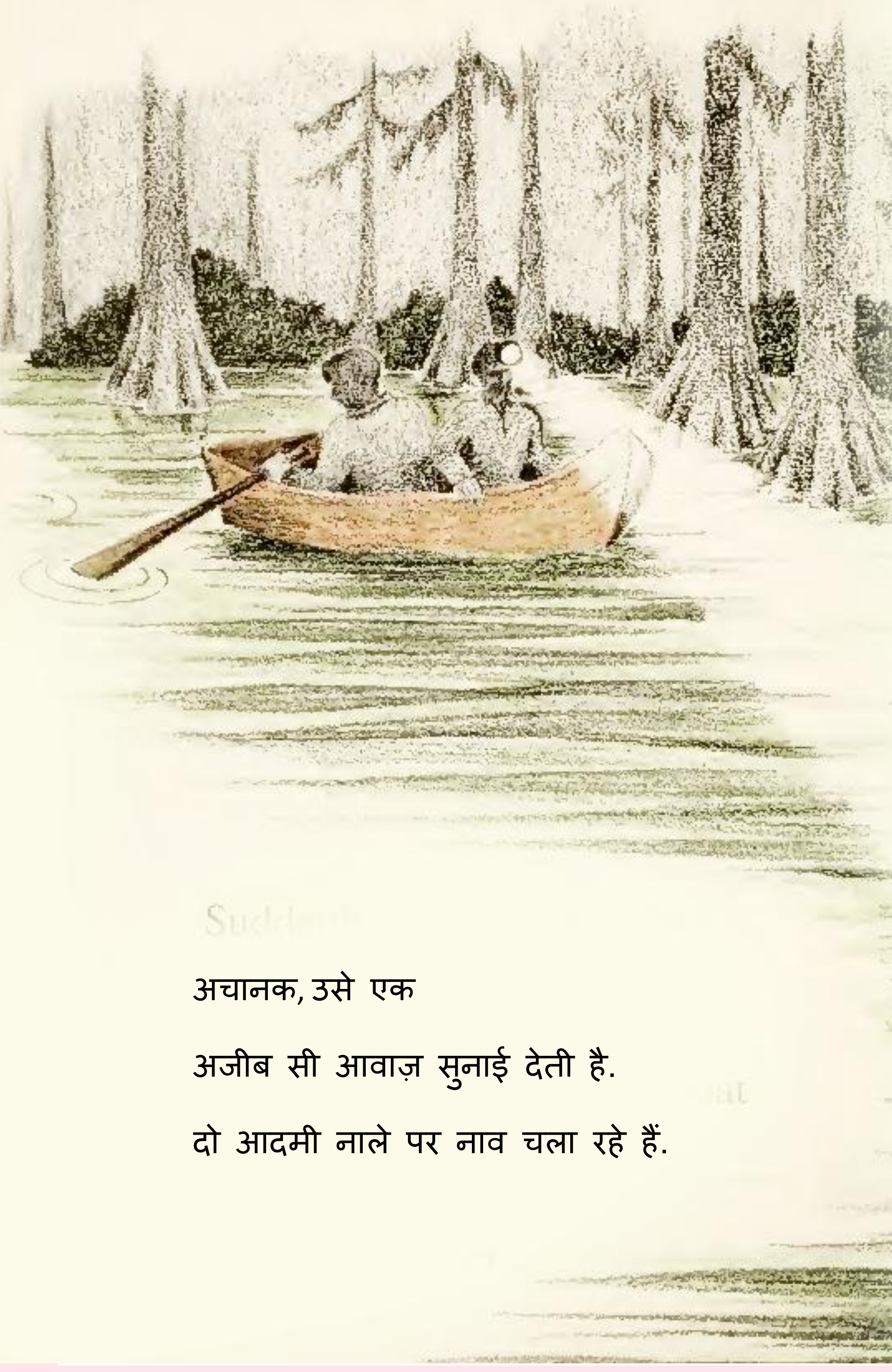
माँ मगरमच्छ दो महीने से

अपने अंडों की रखवाली कर रही है.



अगस्त के अंत में एक रात

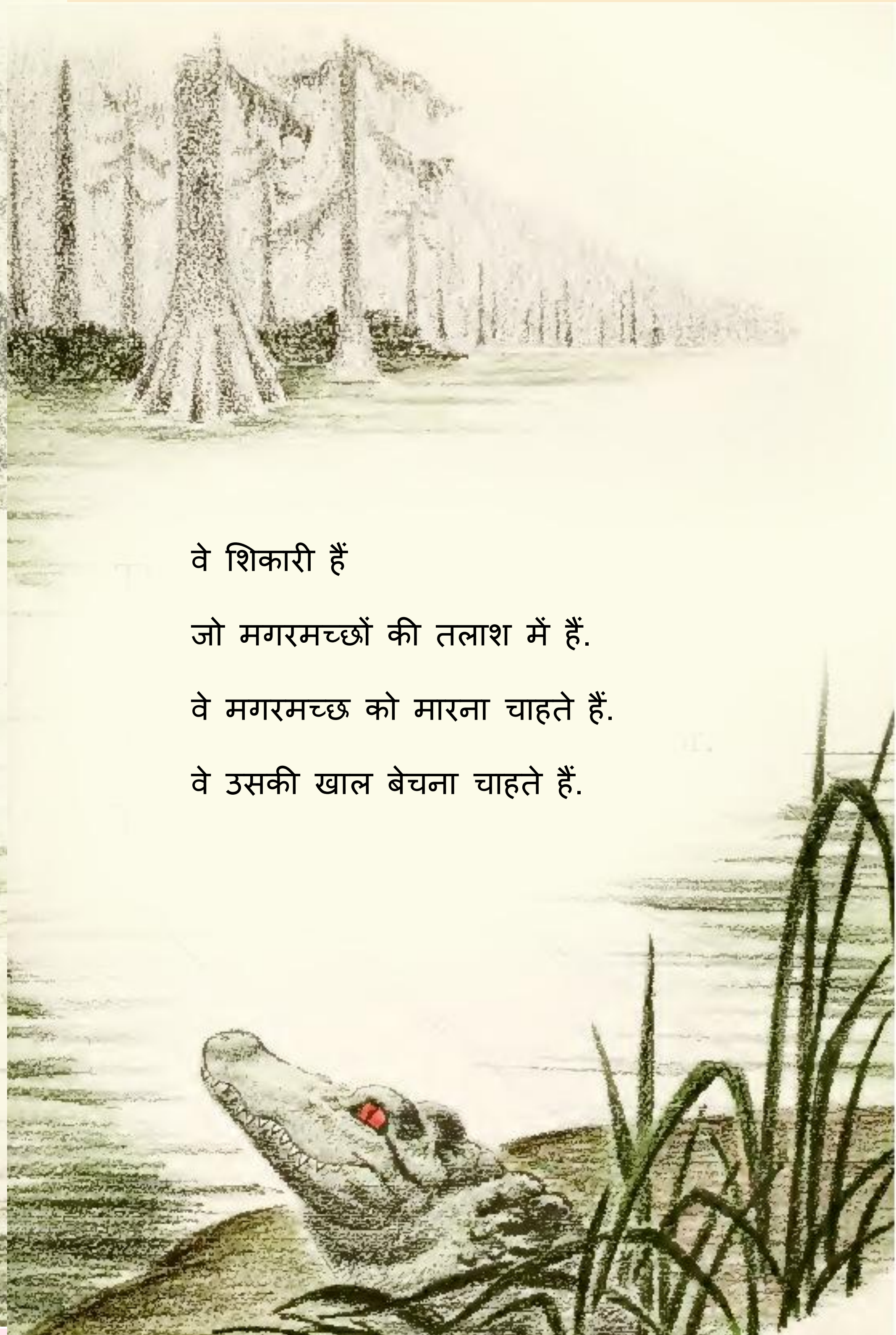
वह घोंसले के पास आराम कर रही है.



अचानक, उसे एक

अजीब सी आवाज़ सुनाई देती है.

दो आदमी नाले पर नाव चला रहे हैं.



वे शिकारी हैं

जो मगरमच्छों की तलाश में हैं.

वे मगरमच्छ को मारना चाहते हैं.

वे उसकी खाल बेचना चाहते हैं.



माँ मगरमच्छ एकदम शांत बैठी है.

एक शिकारी उस पर अपनी बंदूक चलाता है.

गोली उसकी पीठ के ऊपरी हिस्से में लगती है.

लेकिन उसे कोई चोट नहीं लगती.

वह अपनी छोटी मोटी टाँगों को

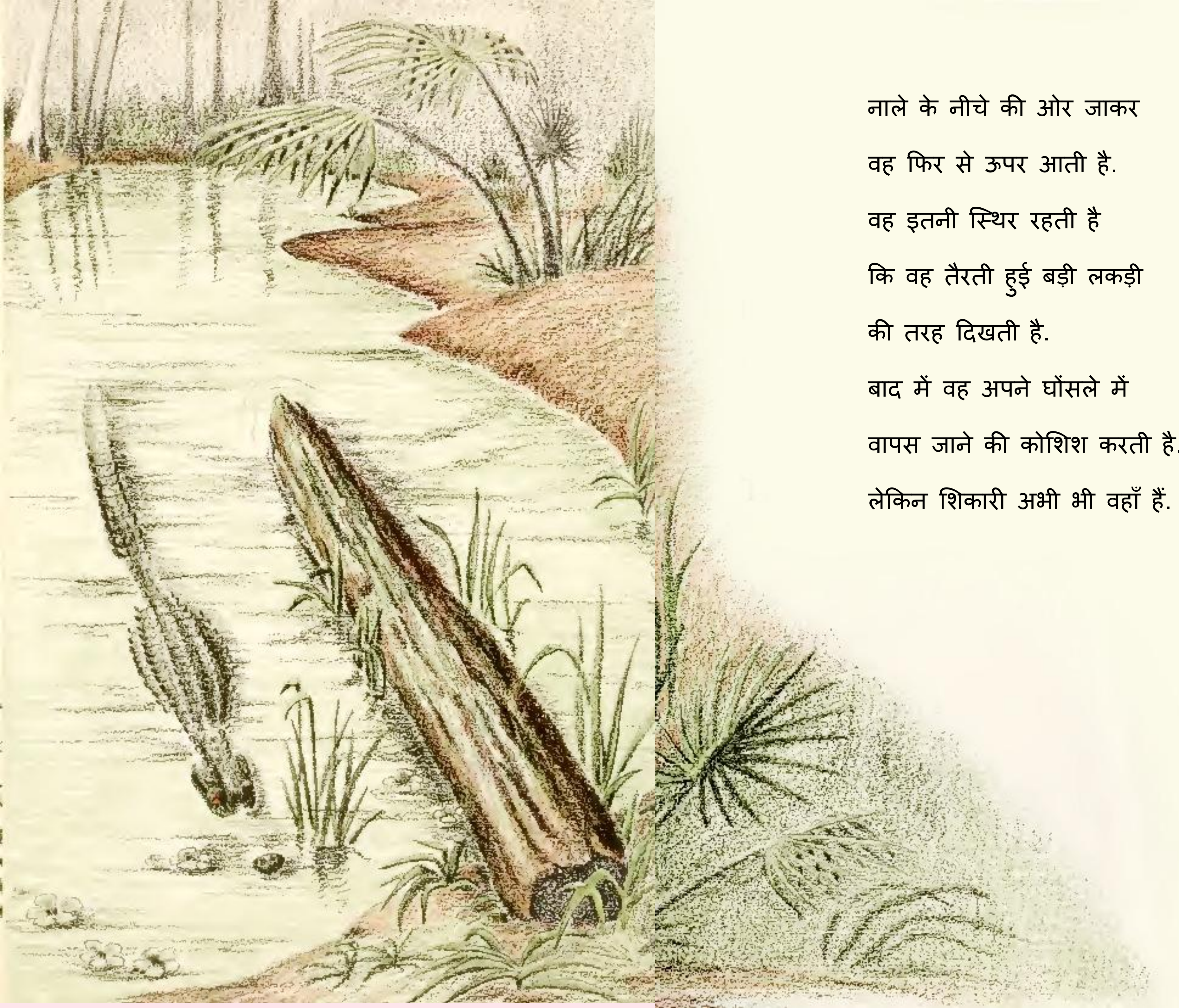
अपने शरीर से सटा लेती है.

वह अपनी शक्तिशाली पूँछ हिलाती है.

फिर नाले में गोता लगाती है

और पानी के नीचे गायब हो जाती है.





नाले के नीचे की ओर जाकर

वह फिर से ऊपर आती है.

वह इतनी स्थिर रहती है

कि वह तैरती हुई बड़ी लकड़ी

की तरह दिखती है.

बाद में वह अपने घोंसले में

वापस जाने की कोशिश करती है.

लेकिन शिकारी अभी भी वहाँ हैं.

उसे अपने घोंसले से

दूर रहना पड़ता है.

घोंसले के अंदर

मगरमच्छ के बच्चे

अंडों से बाहर निकालने लगे हैं.

अधिक से अधिक बच्चे

अपने अंडों के कवच तोड़कर बाहर आते हैं.

लेकिन वे घोंसले से बाहर नहीं जा पाते हैं.





वे उन पौधों से होकर

नहीं निकल पाते जो उन्हें ढके हुए हैं.

अगर वे जल्दी से बाहर नहीं निकलेंगे,

तो वे मर जाएंगे.

अंडों के कवच से बाहर निकलने के बाद

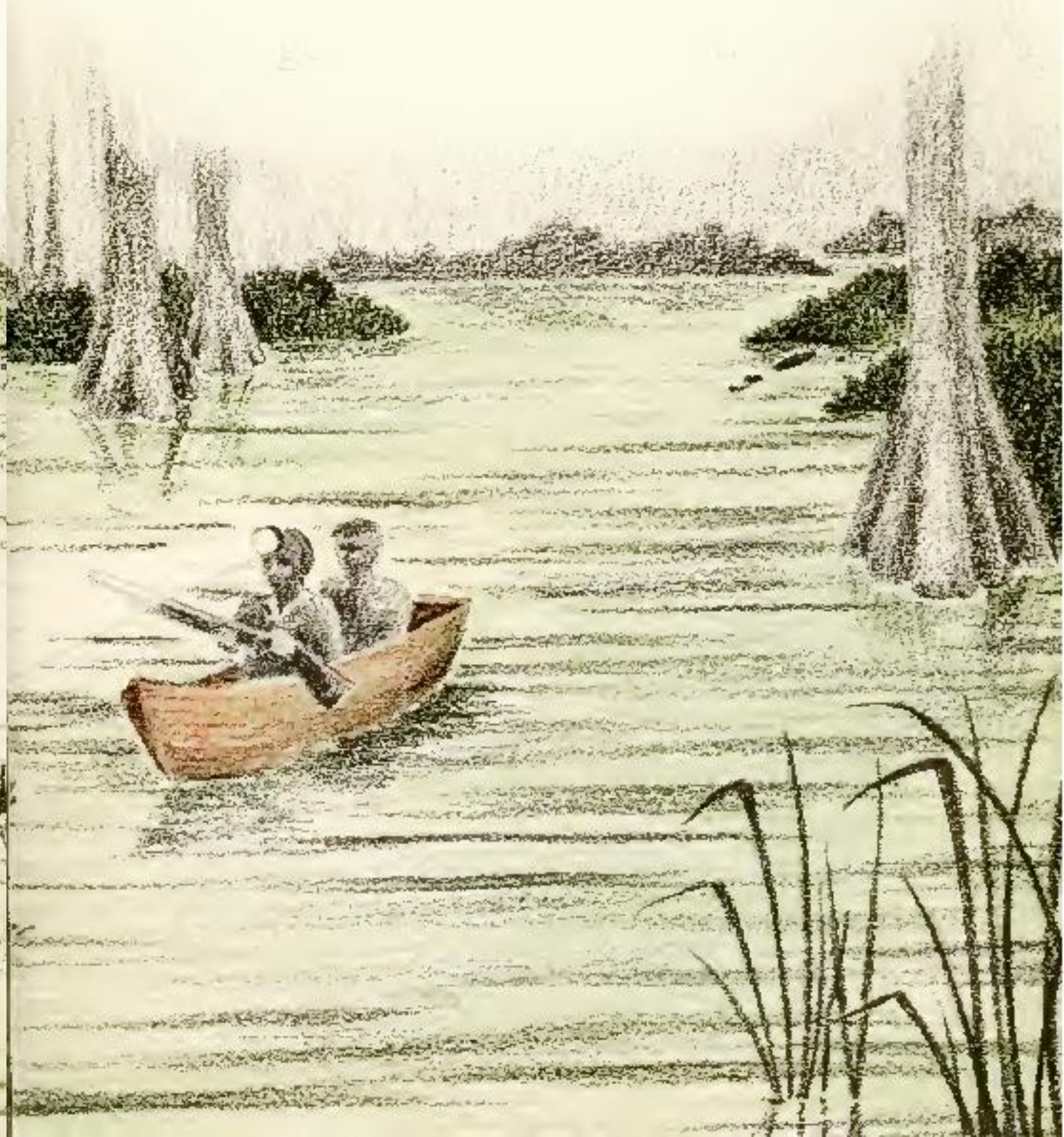
उन्हें हवा और भोजन

की ज़रूरत होती है.

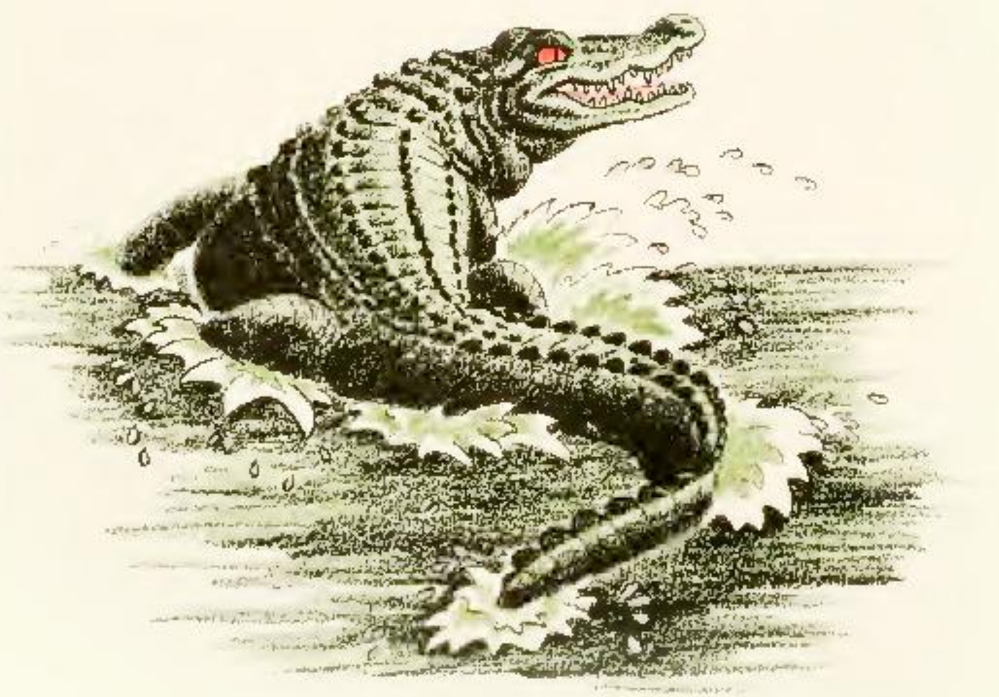


माँ मगरमच्छ को उन्हें निकालना पड़ेगा,

लेकिन वह वापस घोंसले में नहीं जा पाती है.



फिर शिकारी एक और मगरमच्छ को पानी से बाहर निकलते हुए देखते हैं. वो माँ मगरमच्छ से भी बड़ा है. वे नाव से उसके पास जाते हैं.





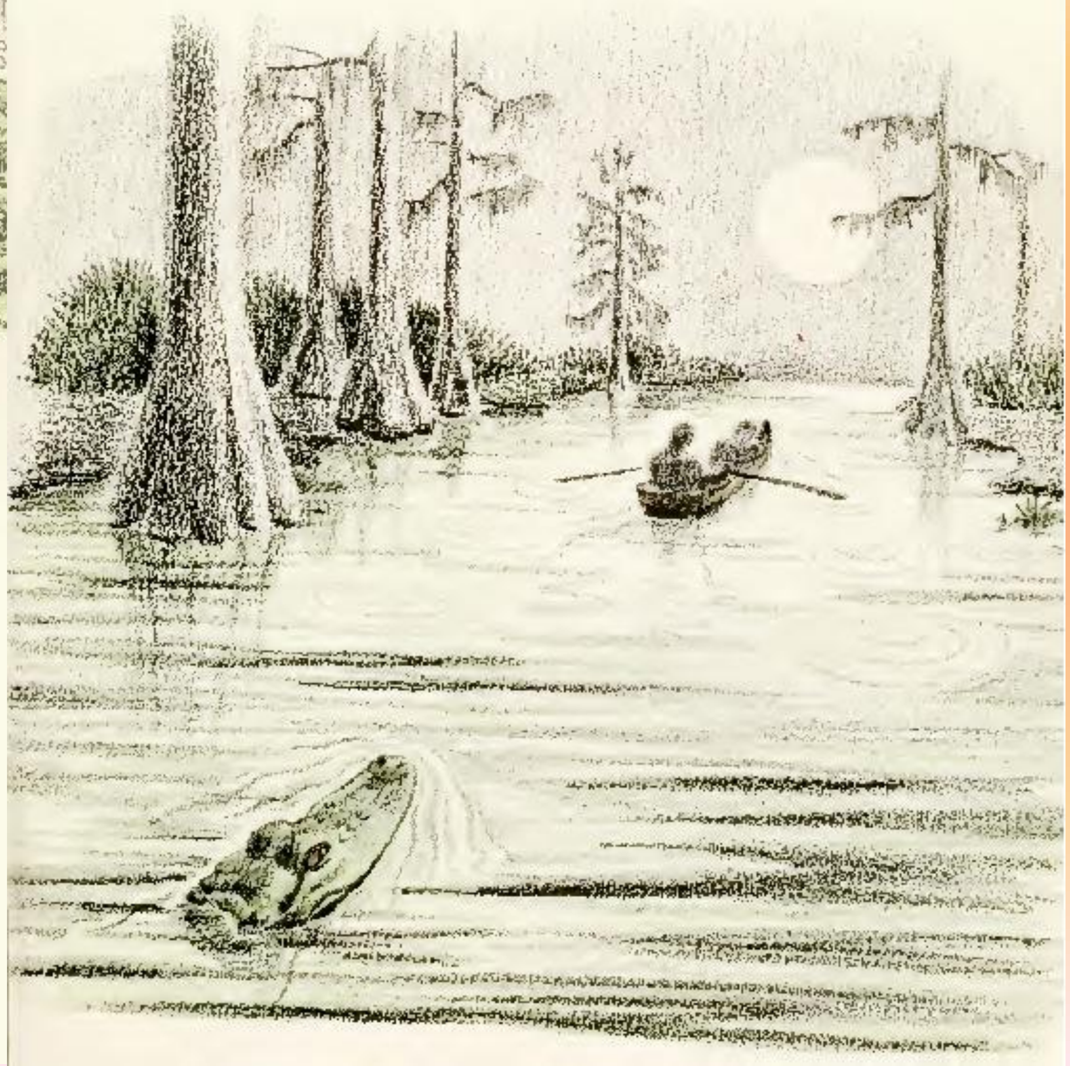
एक आदमी उस पर गोली चलाता है. लेकिन वह उसे नहीं लगती. मगरमच्छ जोर से दहाड़ता है. वह नाव के पीछे जाता है.



एक शिकारी नाव में गिर जाता है.

दूसरा शिकारी नाव को

जितनी जल्दी हो सके दूर ले जाता है.



अब माँ मगरमच्छ के लिए

अपने घोंसले में वापस आना सुरक्षित है.

वह पानी से बाहर निकलती है

और घोंसले के पास ही आराम करती है.





वह घोंसले के अंदर

बच्चे मगरमच्छों की धीमी आवाज़ सुनती है.

वह घोंसले का कुछ हिस्सा साफ करती है



चालीस बच्चे मगरमच्छ

अपने अंधेरे घोंसले से

सुबह की रोशनी में बाहर निकलते हैं.

वे अपनी माँ की तरह ही दिखते हैं.

लेकिन वे अभी केवल नौ इंच लंबे हैं.



बच्चे अपनी माँ के पास भागते हैं.

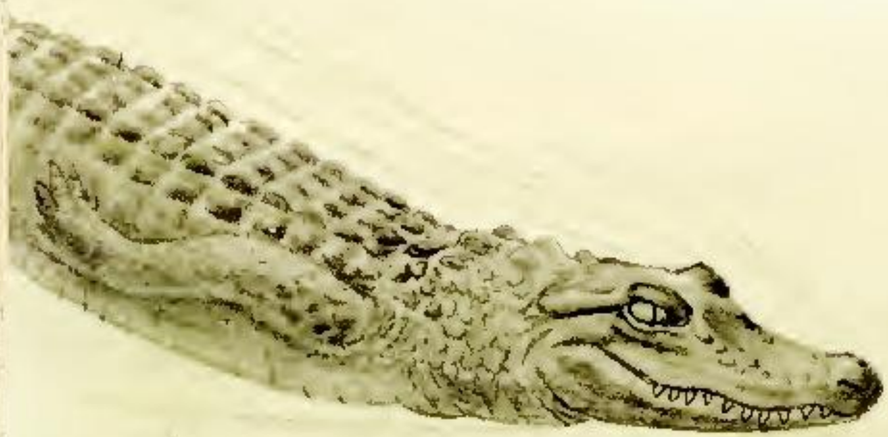
वह धीमी आवाज में गुर्राती है.

वे साथ रहते हैं.

कुछ दिनों बाद माँ

भोजन की तलाश में

पानी में गोता लगाती है.





वह देखती है कि कोई काली चीज़

उसकी ओर आ रही है.

वह बहुत शांत हो जाती है.

वह काली चीज़ मछलियों का एक झुंड है.

उस समूह में सैकड़ों मछलियाँ हैं.

वे और करीब आती जाती हैं.

अपनी मोटी पूँछ को हिलाते हुए
माँ कुछ मछलियों को किनारे पर फेंकती है.
फिर वह पानी से बाहर निकलती है
और मछलियों को चबाना शुरू करती है.
उसके बच्चे मछलियों के वे
छोटे-छोटे टुकड़े खाते हैं
जो उनकी माँ के मुँह से निकलते हैं.



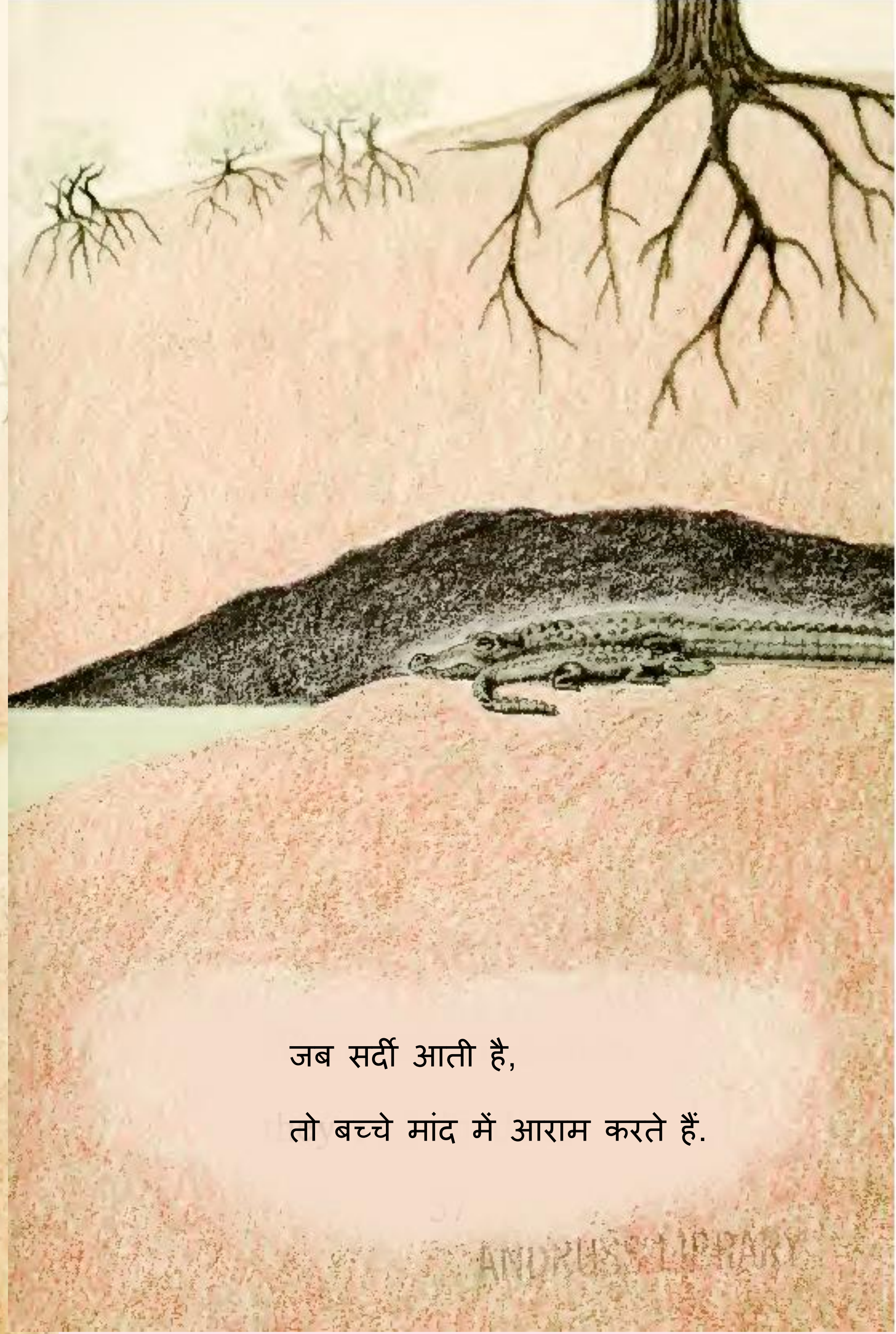


जल्द ही बच्चे

खुद अपने भोजन को तलाशने लगते हैं.

वे बड़े हो जाते हैं.





जब सर्दी आती है,

तो बच्चे मांद में आराम करते हैं.

वसंत ऋतु में

प्रत्येक युवा मगरमच्छ

रहने के लिए अपना स्थान ढूँढता है.

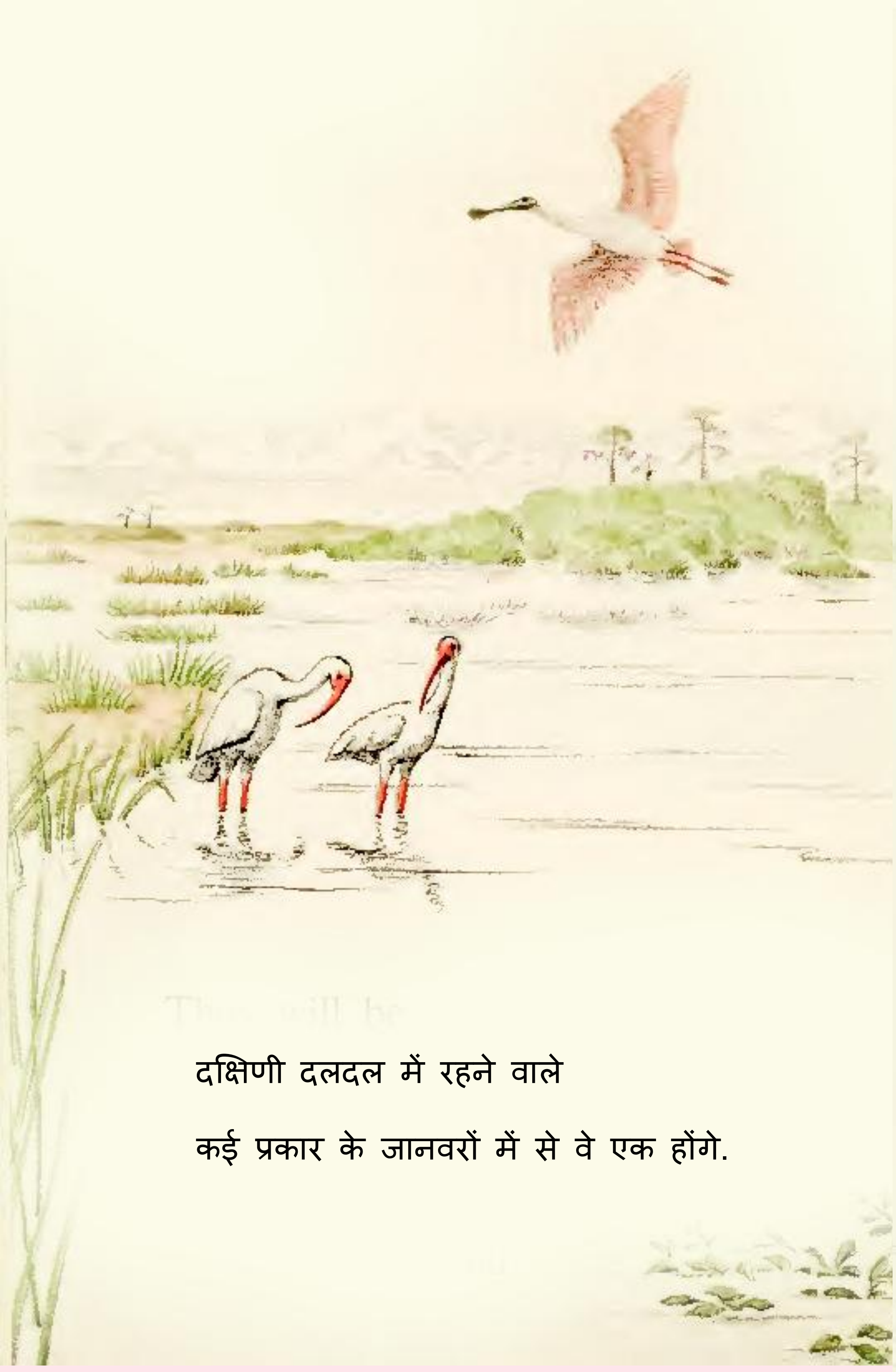
लगभग दस वर्षों में

यदि वे अन्य जानवरों

या शिकारियों द्वारा नहीं मारे जाते हैं,

तो मगरमच्छ अपनी माँ जैसे बड़े हो जाएँगे.





दक्षिणी दलदल में रहने वाले

कई प्रकार के जानवरों में से वे एक होंगे.



अंत